साहित्य और सिनेमा : फनिश्वर नाथ रेणुके कामों का फिल्मीकरण

डॉ.प्रेरणा सिन्हा , असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग ,
आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय

Abstract

इस पेपर के कारण मुझे ये सौभाग्य मिला कि मैं रेणु के सेंटेनरी सेलिब्रेशन का हिस्सा बन सकी | मेरी कोशिश है उनके साहित्य के माध्यम से उत्तरी बिहार को समझना, खासकर आंचलिकता के परिवेश मैं | यद्यपि कई आलोचक उनकी लेखनी को सिर्फ आंचलिकता तक नहीं सीमित रखना चाहते, किन्तु स्वयं रेणु उपन्यास "मैला आँचल " की भूमिका की संस्करण में आंचलिकता की बात कहते हैं |

आलोचक उनकी लेखनी को सिर्फ आंचलिकता तक नहीं सीमित रखना चाहते, किन्तु स्वयं रेणु उपन्यास "मैला आँचल " की भूमिका की संस्करण में आंचलिकता की बात कहते हैं | अपनी पुस्तक "आंचलिकता का परिप्रेक्ष्य और हिंदी उपन्यास " (आनंद प्रकाशन ,२०१६) ' मैला आँचल के सम्पादक डॉक्टर ऋषि कुमार पूर्वकथन में बताते हैं ,- " स्थानीयता का राष्ट्रीयता में रूपांतरण इन्ही आंचलिक उपन्यासों के कारण है | मैला आँचल में अब केवल मेरीगंज गांव नहीं है, पूरा देश दिखता है |" दरअसल, रेणु ने उपन्यास में जिस तरह से पाठकों का बहुत ही गहराई से मर्म को छुआ है, उसमे उनकी भाषा, जो कथाभाषा के साथ-साथ काव्यभाषा का सर्वाधिक योगदान है | इस लेख का उद्देश्य है रेणु की लेखनी और उनका फिल्मीकरण -- यानि क्या उनके साहित्य का फिल्मीकरण एक सार्थक प्रयास रहा ?

Keywords: उत्तरी बिहार,-आंचलिकता, "मैला आँचल", स्थानीयता, राष्ट्रीयता, देश

Objectives of the paper

रेणु की लेखनी और उनका फिल्मीकरण -- यानि क्या उनके साहित्य का फिल्मीकरण एक सार्थक प्रयास रहा **?** इस बात की पुष्टि करने के लिए **verbal** का **visual** में रूपांतरण की संभावनाएं और उसकी विषमताएं देखनी होगी ।

Introduction:

साहित्य और सिनेमा का अनूठा और विचित्र संबंध रहा है। इसकी शुरुआत श्री दादासाहेब फालके की पहली फीचर फिल्म**,** "राजा हरिशचंद्र "१९१३ में आई जो एक छोटे **documentary, 'Life of Christ'** से प्रेरित थी इसी कारणवश भारतीय देवी देवता और मनुष्य को फिल्म में स्थान दिया गया।आसिता बाली अपने शोध **'Female Body in Indian Cinema: A** रिफ्लेक्शन'**(**२०१४ जर्नल) मैं बताती हैँ**,** जब भारतीय फ़िल्म निर्माता फिल्में बनाने लगे

तब चित्रपट लगभग **theatre** और लोक नृत्य का वृहत रूप था जिस के जड़ भारतीय **mythology** और फोकलोर मैं थ**i|**

Methodology

1. Read Renu's short stories, "Panchlight and other short Stories"(Hindi), foreword by Rakshanda Jalil.
2. Read critical chapters on Renu's writings, as well as the book, "आंचलिकता का परिप्रेक्ष्य और हिंदी उपन्यास " (आनंद प्रकाशन ,२०१६) ' मैला आँचल के सम्पादक डॉक्टर ऋषि कुमार
3. Watched the film, "Teesri Kasam".
4. Read reviews of film on youtube

Results

सिनेमा और साहित्य की बात करें तो उन्हें पृथक कर देखा जाता है। कैरेन गेब्रियल, 'Talking Texts: Notes on Literature and Film' में कहती हैं, फिल्म एक स्वंतंत्र कला है और अलग तरह का माध्यम भी, इसमें कोई संदेह नहीं है।एक सत्य है पटकथा और उसका कथानक फिल्म के द्वारा सार्थक होना, और दूसरा है कला और सच्चाई का संबंध। कई ऐसे उदहारण हैं जो इस सम्बन्ध को सफल दिखाते हैं जैसे शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित फिल्में या जैनऑस्टेन या Dickens के उपन्यास या E.M. Forster,प्रेमचंद की कहानियों का रूपांतर हो,ऐसी फिल्में अनुकूलन के बजाय निष्ठावान अनुवाद या फिर, टिप्पणी करके निर्माता और निर्देशक अपना दृष्टिकोण दे सकते हैँ, साहित्यिक विश्लेषण भी दे सकते हैँ।

Conclusion

ये कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि साहित्य और सिनेमा का सम्बन्ध जो वर्षों से कई आयामों से गुजरा है**,** कभी घनिष्ट देखा गया तो कभी बिलकुल भिन्न माध्यम**,** लेकिन पिछले ३० वर्षों में निःसंदेह कहानीकारों का साहित्य की ओर रूझान ये स्पष्ट करता है कि हमारे लेखकों की लेखनी फिल्मकारों को कहीं ज़्यादा प्रभावित का रहा है**,** तभी तो हिंदी**,** अंग्रेजी या किसी और भाषा के लेख अब चित्रपट पर अक्सर देखे जा रहे है**|** इसकी ग्लोबल दुनिया में कहीं ज़्यादा गुंजाइश है**|** रेणु की लघु कथाएं और उपन्यास की लोकप्रियता है**!** रेणु की कहानियां पढ़ी जा रही है और समीक्षाएं भी हो रही है**,** और वो दिन दूर नहीं जब 'डाग्दर बाबू' या और कोई शीर्षक फिल्म 'मैला आँचल'**,** 'मारे गए गुलफाम' को और भी लोकप्रिय और सामयिक बनाएगा**|**र रहेगी**|**

ACKNOWLEDGEMENTS

I acknowledge the critical books, short stories of Renu, Foreword by Rakshanda Jalil in that book, other books and most importantly, the film "Teesri Kasam", which made me understand the perception of Renu and obviously the director, Nibendu Ghosh. They have all

contributed to my understanding of Renu's depiction of social realism, though of a village, presents macrocosm of the microcosm.

Works Cited

- Bali, Aasita, **Female Body in Indian Cinema**: **A Reflection**, *IJLLC*, August 2014 edition, Vo. 1l No. 1, pp 97
- Dwyer, R, *Filming the Gods-Religion and Indian Cinema*, New York: Taylor and Francis, 2006, pp
- *Jalil, Rakshanda,* ***Translator's Introduction****, Panchlight and Other Stories: Phanishwar Nath Renu, Translated from the Hindi by Rakshanda Jalil,* Orient Blackswan Private Limited 2010*,* New Delhi*,* pp *4*
- Junghare, Indira, ***Introduction****, The Soiled Border: translated with an Introduction by Indira Jhingare,* Delhi*:* Chanakya Publications*,* 1991*,* pp xxiv
- ***https://en.m.wikipedia.org,*** **Teesri *Kasam (translated The Third Vow)***
  is a 1966 Hindi language drama film directed by Basu Bhattacharya and produced by lyricist Shailendra.
- Film *Teesri Kasam*, directed by Basu Bhattacharya and produced by film lyricist, Shailendra, dialogue by Renu and Nabendu Ghosh, screened 1966. (N.P. Hindi dialogues and expressions have been reproduced as it is)
- *IMDb Review*, from Headley Lamarr, entitled **The** *End of Innocence*? 8 October, 2007. {NOTE: When Heeraman says *isshhh*—you can sense his embarrassment/disbelief/humor-Mr. Bhansali's Paro tried to copy it but that became a mockery…. (
- "आंचलिकता का परिप्रेक्ष्य और हिंदी उपन्यास " (आनंद प्रकाशन ,२०१६) ' मैला आँचल के सम्पादक डॉक्टर ऋषि कुमार